

Padma Shri



SHRI ABDULKHADAR IMAMSAB NADAKATTIN

Shri Abdulkhader Imamsab Nadakattin is the chairman and founder of Vishwashanthi Agriculture Research Centre, Annigeri. He is widely renowned social worker and an environmentalist. He has also developed a number of user friendly and useful agriculture innovations. He is actively involved in inventing the agricultural equipments required by small and marginal farmers. His equipment's have become farmer friendly because they are economical and do not require much technical knowledge.

2. Born on 3rd March, 1953, Shri Nadakattin is a serial innovator and his prominent innovations include a device to separate tamarind seeds, ploughing blade manufacturing machine, seed cum fertilizer drill, water-heating boiler, an automatic sugarcane sowing driller and a wheel tiller. All his innovations demonstrate principles of sustainability, cost-effectiveness, eco-friendliness and most equipments a social acceptance. His in-depth knowledge of agro-climatic conditions and soil characteristics has made him an inspiration to other farmers in the country.

3. Shri Nadakattin's first innovation was a "Water Alarm," which was his personalized attempt to solve his own nature of sleeping till late in the mornings. He tied a thin rope at the end of the key of the alarm in such a way that when the key unwound itself, the string tied to the key got wound. The string was in turn tied to a bottle filled with water when the key was completely unwound, the bottle would tilt, and the water would fall on his face. Later he developed Agri-technologies and equipments which addressed a variety of needs for the local people while maintaining relevance with modern agriculture.

4. Shri Nadakattin was conferred with a Lifetime Achievement Award in 2015 during National Innovation Foundation (NIF), an autonomous body of Department of Science & Technology (DST)'s 8th National Grassroots Innovation and Outstanding Traditional Knowledge Awards by the then Hon'ble President of India Shri Pranab Mukherjee. True to his grassroots spirit and as a mark of respect for the award, he chose to walk barefoot and hence came to be known as the country's "Barefoot Scientist".

5. Owing to Shri Nadakattin's portfolio of innovations related to tamarind, people started calling him "hunase huccha", which means tamarind maniac. It started with his success in growing tamarind with scarce but alkaline water and further graduated with experiments like the technique for harvesting tamarind from the tree and also the highly accepted machine to separate tamarind seeds. This inspired him to develop a machine for slicing tamarind. In furtherance of success with tamarind, he came up with innovations to address agriculture operations like deep ploughing, sowing of seeds and also fuel-efficient water heating boiler.

6. Shri Nadakattin is the recipient of numerous awards and honours. He received the State Level 1st Prize of Karnataka region for the Innovation machine of Tamarind cultivation and processing from National Innovation Foundation India (Dept of Science and Technology, Govt of India in 2001). He also received Kanaka Prashasti on 589th Kanaka Jayanthi and Rajyotsava Award 2017, Govt. of Karnataka from former Chief Minister of Karnataka Shri. Siddaramaiah at Ravindra Kalakshetra Bengaluru.

पद्म श्री



श्री अब्दुलखादर इमामसाब नडकट्टीन

श्री अब्दुलखादर इमामसाब नडकट्टीन विश्वशांति कृषि अनुसंधान केंद्र, अन्निगेरी के अध्यक्ष और संस्थापक हैं। वह एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और पर्यावरणविद् हैं। उन्होंने कई प्रयोक्ता-अनुकूल और उपयोगी कृषि उपकरण भी विकसित किए हैं। वह छोटे और सीमांत किसानों के लिए उपयोगी कृषि उपकरणों के आविष्कार में सक्रिय हैं। किफायती होने के कारण उनके उपकरण किसानों के लिए उपयोगी हैं और उन्हें चलाने के लिए अधिक तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है।

2 3 मार्च, 1953 को जन्मे, श्री नडकट्टीन लगातार आविष्कार करते रहते हैं। उनके महत्वपूर्ण आविष्कारों में इमली के बीज को अलग करने का उपकरण, जुताई ब्लेड बनाने की मशीन, बीज और खाद ड्रिलिंग मशीन, वाटर-हीटिंग बॉयलर, स्वचालित गन्ना बुवाई ड्रिलर और व्हील टिलर शामिल हैं। उनके सभी आविष्कार टिकाऊ, सस्ते, पर्यावरण अनुकूल और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक स्वीकृति के सिद्धांतों के अनुरूप हैं। कृषि-जलवायु स्थितियों और मिट्टी की विशेषताओं के उनके गहन ज्ञान ने उन्हें देश के अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बना दिया है।

3 श्री नडकट्टीन का पहला आविष्कार "वाटर अलार्म" था, जो सुबह देर तक सोने की उनकी आदत को सुधारने का उनका व्यक्तिगत प्रयास था। उन्होंने अलार्म की चाबी के सिरे पर एक पतली रस्सी इस तरह बांध दी कि जब चाबी स्वतः खुले, तो चाबी से बंधी रस्सी लिपटने लगे। यह रस्सी पानी से भरी बोतल से बंधी थी, जब चाबी पूरी तरह से खुल जाती थी, बोतल झुक जाती थी और पानी उनके चेहरे पर गिर जाता था। बाद में उन्होंने ऐसी कृषि-प्रौद्योगिकियां और उपकरण विकसित किये जो आधुनिक कृषि के लिए प्रासंगिक होते हुए स्थानीय लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करते थे।

4 विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के एक स्वायत्त निकाय नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन (एनआईएफ) के 8वें ग्रासरूट इनोवेशन एंड आउटस्टैंडिंग ट्रेडिशनल नॉलेज अवार्ड्स के दौरान 2015 में भारत के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया था। वह अपनी जमीन से जुड़ी भावना के अनुरूप और पुरस्कार के प्रति सम्मान स्वरूप पुरस्कार लेने के लिए नंगे पैर गए और इसलिए वह देश के "बेयरफूट वैज्ञानिक" कहे जाने लगे।

5 श्री नडकट्टीन के इमली से संबंधित आविष्कारों के पोर्टफोलियो के कारण, लोग उन्हें "हुनसेहुछा" कहने लगे, जिसका अर्थ है इमली सनकी। इसकी शुरुआत दुर्लभ किन्तु क्षारीय पानी से इमली की खेती करने में उनकी सफलता से हुई और फिर उन्होंने पेड़ से इमली तोड़ने की तकनीक और इमली के बीज को अलग करने के लिए लोकप्रिय मशीन जैसे आविष्कार किए। इससे उन्हें इमली काटने के लिए एक मशीन बनाने की प्रेरणा मिली। इमली की खेती से संबंधित सफल आविष्कारों को आगे बढ़ाते हुए, उन्होंने गहरी जुताई, बीजों की बुवाई और कम ईंधन लागत वाले वाटर-हीटिंग बॉयलर जैसे कृषि आविष्कार भी किए।

6 श्री नडकट्टीन को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन इंडिया (विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार से 2011 में) इमली की खेती और प्रसंस्करण की मशीन के लिए कर्नाटक क्षेत्र का राज्य स्तरीय प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें रवींद्र कलाक्षेत्र बेंगलुरु में कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैया के हाथों 589वीं कनक जयंती के अवसर पर कनक प्रशस्ति और कर्नाटक सरकार का राज्योत्सव पुरस्कार 2017 भी प्राप्त हुआ।